पद १४३

(चाल - अहमस्मि.)

शिष्य पुसे कोण मी कोण ब्रह्म। मज माजीं मी मी स्फुरे न कळे खूण वर्म।।धू.।। कामक्रोधादि संकल्प उठती। स्वात्मतेजीं भासती। भोग देती गुण विरोधें होतीं, मावळती। जन्मल्या जाणतो मी सत्यब्रह्म (ज्ञानधर्म)।।१।। आत्मस्थलीं शक्ति ही कार्याकारी। कर्मजाळें उघडी संहारी। विषयभोगी ही बुद्धि स्मात्मलहरी।

स्वार्थी विषयाकर्षी तो तो मी ब्रह्म।।२॥ निविड स्वरूपींच चित्र भासे। सर्व विषयीं संकल्प मी मी महिमा।।३॥ (अपूर्ण)